लौहित्य साहित्य सेतु : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 1, संख्या: 1; जुलाई-दिसंबर, 2020

उत्पल डेका की कविताएँ

1

सर्जिकल स्ट्राइक

सरहदें नहीं थीं

जैसे अब हैं

नदी रही थी उसकी

सीमा-परिसीमा ।

सरहद के उस पार

लंबे इंतज़ार में बैठा फ्लेमिंगो

इधर शपथ लिया हुआ वृक्ष ।

एक खबर आती है

राज दूतावास से, और

कश्मीरा सिंह गिरफ्तार हो जाता है ।

देश का विभाजन

साम्प्रदायिकता

फिर भी प्रवाहमान नदी की

खोज है जारी ।

सरहद तोड़ उस अतीत के लिए

जहाँ सरहदें नहीं थीं ।

क्या सरहदें मिटा सकेंगी

दोनों पार के पदचिन्ह

ज़िंदगी तो बस एक आर्ट गैलरी है

एक जंग है

आग की लपटों में राख हुए मकान

याद दिला देते हैं बचपन के बंधन की ।

शहादत की खबर जब आती है

सिंदूरी माँग उजड़ जाती है ।

खोखरापारा[1] के हृदय में

कच्चे घावों का होता है चीत्कार

यह शत्रुवध का नया तरीका है

जहाँ सजता है जीवन

पर- मृत्यु तो अजेय है ।

2
नदी

नदी एक पहेली की तरह है

फिर भी निरंतर बहती है

न जाने कितनी बार नदी खेलती है

जिंदगी के साथ

फिर भी नदी में बहती है राग ' ऐनितम'[2]।

नदी के किनारे

कई सदियाँ गुजर गईं

लिखा है इतिहास

'लाचित'[3] या 'जंकी पानै'[4] के

इतिहास की कूची से

नदी की स्वतंत्रता को

कैसे करे अंकन ।

पतझर के पत्तों पर भी

बेजान से

न लिख पाते खुद के दर्द को ।

बाढ़ तू हर बार क्यों आती है

नदी को सुन्दर बनी रहने दे ।

नदी और मिट्टी से

हमारे जन्मों का नाता है ।

नदी तेरे साथ हमारा न रहा कभी इख्तिलाफ़

रहा तो सिर्फ युगों से चली

आनेवाले दिलों का रिश्ता ।

3
फुटपाथ में

रोहिणी सैक्टर-3 के फुटपाथ में

गम का झोला लिए

मैंने देखा था उसे ।

दो टूक कलेजे, सूखे प्यास में तड़पे

बस यही,

और कुछ नहीं ।

आँखों में भोगे हुए अतीत के

काले-काले बादल

बाढ़ की विभीषिका से भरे खेत हो !

चौराहे की सड़क हादसे चिकार

शायद वह हो सकता है महिबुल हक!

वह सपना सजाता है।

उजड़ी दुनिया को

फिर से बसाने का

और शायद इसलिए

वह आज राही है

अनजान राहों और फुटपाथों का।

1. खोखरापारा- पाकिस्तान के एक गाँव का नाम है।

2. ऐनितम: मिसिङ लोकगीत

3. लाचित: असम का वीर योद्धा लाचित बरफुकन

4. जंकी-पानेइ: मिसिङ लोककथा के अमर प्रेमिक-प्रेमिका

संपर्क-सूत्र:
utpalkashyap123@gmail.com
8011472744